युग की आध्यात्मिक क्रांति में जुड़ते नये सहयोगी

बंगला भाषा में पहला संजीवनी साधना सत्र सम्पन्न

शोदपुर, जिला हुगली (पश्चिम बंगाल) के २७१ भाई-बहिनों का एक बड़ा दल शांतिकुंज आया। आये तो थे हरिद्वार-ऋषिकेश की तीर्थयात्रा का मन बनाकर, लेकिन शांतिकुंज के आध्यात्मिक वैभव और अपनेपन से प्रभावित होकर यहीं रह गये। जब लौटे तो युग निर्माणी बनकर। तब प्रत्येक व्यक्ति युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का शिष्य था, यज्ञोपवीत धारी द्विज था। सबके मन में 'श्रीराम' के दूत बनकर 'ठाकुर' की भक्ति को चरितार्थ कर दिखाने का उल्लास था।

निरंतर प्रखर होती युगचेतना का प्रभाव ही है कि तेलुगु में ९ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र सम्पन्न होने के तुरंत बाद उपरोक्त दल के लिए बंगला भाषा में ऐसे ही एक विशेष शिविर का आयोजन करना पड़ा। शांतिकुंज में आयोजित होने वाला यह पहला नौ दिवसीय बंगला भाषी शिविर था, जिसने आगामी बड़े अभियान चलाने का उत्साह जगाया।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने विदाई उद्बोधन में उनके संकल्प और साहस की सराहना करते हुए बंगाल को वीरों की भूमि बताया। उन्होंने कहा कि समय की माँग के अनुरूप अवतारी चेतना की शिक्षा भी बदल जाती है। अतः ठाकुर की भूमि के शूरमाओं को अब सद्बुद्धि की देवी गायत्री एवं सत्कर्मों के देवता यज्ञ भगवान को घर-घर प्रतिष्ठित करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। इसी से भारत की धर्मध्वजा सारे विश्व पर फहरायेगी, हम सही मायनों में आजाद होंगे।

प्रस्तुत शिविर में शांतिकुंज के वरिष्ठजनों ने गुरुवर का संदेश दिया। श्री शंकरनाथ झा और श्री राधामोहन ओझा ने उनका बंगला अनुवाद किया। आदरणीया शैल जीजी ने चरित्र निर्माण को आज की सर्वोपरि आवश्यकता बताया। इस शिविर में आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शांतिकुंज में २१ से २९ नवम्बर २००७ एवं २१ से २९ मार्च २००८ में बंगला भाषियों के विशेष संजीवनी साधना सत्र चलाने और बसंत पर्व से पाक्षिक प्रज्ञा अभियान का बंगला संस्करण आरंभ करने की घोषणा की। शिविरार्थियों ने हुगली, वर्धमान, मिदनापुर एवं हावड़ा जिलों के १५१ गाँवों में ५ कुण्डीय विद्या विस्तार गायत्री महायज्ञ आयोजित करने का संकल्प लिया। शिविर संयोजन पूर्वी जोन कार्यालय ने किया। ❍

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते श्री राधामोहन ओझा, साथ में शांतिकुंज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी

- शांतिकुंज में अगले बंगला भाषी संजीवनी साधना सत्र **२१ से २९ नवम्बर २००७ एवं २१ से २९ मार्च २००८** की तारीखों में।
- पाक्षिक प्रज्ञा अभियान का बंगला संस्करण आरंभ होगा।
- शिविरार्थियों ने १५१ गाँवों में विद्याविस्तार गायत्री महायज्ञों का संकल्प लिया।

गायत्री परिवार की सहयोगी बनी आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहिनें

रुड़की, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

२२ अगस्त को रुड़की नगर पालिका के विशाल सभागार में आयोजित एक समारोह के साथ गायत्री परिवार द्वारा जनपद की आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहिनों को प्रशिक्षित करने के अभियान का समापन हुआ। समारोह में उपस्थित ४०० आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहिनों को संबोधित करते हुए श्री राममहेश मिश्र-देव संस्कृति विश्व विद्यालय ने समाज के नवनिर्माण के लिए लोक शिक्षण की आवश्यकता बतायी। उन्होंने कहा कि देश में साक्षरता बढ़ाने का अभियान तो जोरों पर है, किंतु सद्गुण बढ़ाने के प्रयासों का नितांत अभाव है। हमारी संस्कार परम्परा, पर्व-त्यौहार आदि शिक्षा के ऐसे अनौपचारिक माध्यम हैं, जिनसे समाज की सोच बदली जा सकती है। इस अवसर पर उन्होंने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं की ओर संकेत करते हुए उन्हें समाप्त कर संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करने के लिए युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं उनके गायत्री परिवार से जुड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि कम से कम पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारंभ, जन्मदिन, विवाह दिन आदि संस्कार मनाने का प्रचलन तो हर गाँव में आरंभ हो ही जाना चाहिए। आँगनबाड़ी की कार्यकर्त्ता बहिनें इस कार्य को बखूबी कर सकती हैं।

आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहिनें प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते हुए

आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहिनों के प्रशिक्षण की शृंखला श्रीमती ललिता वर्मा-जिला कार्यक्रम अधिकारी ने तत्कालीन जिलाधिकारी के संज्ञान में लाते हुए १० जुलाई को हरिद्वार से आरंभ की थी। तत्पश्चात् बहादराबाद, लक्सर, खानपुर, भगवानपुर, नारसन में गोष्ठियाँ आयोजित कर २००० बहिनों को प्रशिक्षित किया गया। उन्हें गायत्री परिवार के सर्वश्री देवशंकर शर्मा, रामबक्श आर्य, श्रीनिवास पाण्डेय एवं एस.एन.सिंह ने प्रशिक्षित किया। सभी बहिनों को विषय से संबंधित ८-८ पुस्तकें गायत्री परिवार रुड़की एवं हरिद्वार शाखा ने निःशुल्क उपलब्ध करायीं। प्रशिक्षित बहिनों ने गायत्री परिवार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

रुड़की में हुए समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती मंजू कनौजिया बाल-विकास परियोजना अधिकारी ने की। श्रीमती कृष्णा कामरा एवं शशि कक्कड़ ने गीत दिये। संचालन श्रीमती गीता शर्मा एवं आभार प्रदर्शन कु.संध्या भट्ट ने किया। इस अभियान में श्रीमती राजबाला सिंह, कविता जाखड़, अलका धर, कमलेश, शीलचन्द्र, सुषमा रावत, किरण गुप्ता, प्रकाश श्रीवास्तव, रामगोपाल अग्रवाल, डी.एल. शर्मा, डी.पी. दुबे, मामचंद प्रजेश आदि का भी विशेष सहयोग रहा। ❍

देसंविवि के स्नातक की सेवाओं से अभिभूत हैं कर्नल राजेन्द्र सचदेवा

कुछ समय पहले तक हमारी रेजीमेंट २३ हजार फीट से ज्यादा ऊँचाई पर सियाचिन के दुर्गम पहाड़ों पर तैनात थी। हाड़ गला देने वाली ठण्ड, जीवन के लिए जरूरी ऑक्सीजन का अभाव, जहाँ सामान्य मनुष्य की तरह सांस लेना भी दूभर था। सेना की ट्रेनिंग में सीखे गये भारी व्यायाम वहाँ लाभ की बजाय हानिकारक थे। ऐसे में हमारी रेजीमेन्ट में कार्यरत शिक्षक (जे.सी.ओ.) श्री चन्द्रप्रकाश तिवारी एक वरदान सिद्ध हुए। उन्होंने धर्म शिक्षक के दायित्वों के निर्वहन के अलावा नियमित योग-आसन कराते हुए रेजीमेन्ट के लगभग ९०० अफसरों व जवानों को दुनिया की सबसे ऊँची पहाड़ियों पर नवप्राण दिए।''

यह उद्गार हैं-भारतीय थल सेना के नई दिल्ली स्थित १५ डोगरा रेजीमेन्ट के कमाण्डिंग ऑफिसर कर्नल राजेन्द्र सचदेवा के। वह ४ सितम्बर को अपने अग्रज श्री हरिगोविन्द सचदेवा, सुरक्षा गार्ड श्री राकेश कुमार और देसंविवि के स्नातक धर्म शिक्षक श्री चन्द्रप्रकाश तिवारी के साथ निजी यात्रा पर शांतिकुंज पधारे थे। उन्होंने बताया कि श्री तिवारी जी के बताये योगाभ्यास ने सैनिकों को सांस आदि की गम्भीर कठिनाईयों से उबारा। फलतः वे एक सहकर्मी ही नहीं, बल्कि छोटे-बड़े सभी के 'आदरणीय गुरुजी' बन गए। श्री राकेश कुमार ने बड़े सहज भाव से कहा कि शांतिकुंज के क्रिया-कलापों और शिक्षाओं को देखकर हमारी उनके प्रति श्रद्धा और बढ़ गयी है।

कर्नल सचदेवा अपने अग्रज हरिगोविन्द सचदेवा के साथ श्रद्धेय डॉ.साहब व आदरणीया जीजी से मिले। उनसे मिले स्नेह से अभिभूत हरिगोविन्द जी ने कहा कि वास्तव में स्वर्ग 'शांतिकुंज' जैसा ही होता होगा। जर्मनी में स्थित भारतीय स्टेट बैंक के उच्चाधिकारी श्री हरिगोविन्द जी ने श्रद्धेय डॉ.साहब को जर्मनी आमंत्रित किया और गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता बनकर इस दिव्य मिशन की सेवा करने की इच्छा व्यक्त की।

शांतिकुंज आए श्री चन्द्रप्रकाश तिवारी ने अपनी सफलता का श्रेय देसंविवि के गुरुजनों, कुलाधिपति महोदय व स्नेहसलिला जीजी के स्नेह तथा परम वन्दनीया माता जी से मिल रहे सूक्ष्म स्नेहाशीष को दिया। उन्होंने बताया कि शायद कर्नल साहब के विश्वास का ही परिणाम है कि नई दिल्ली आने पर उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' पर आधारित एक सुन्दर-सी प्रदर्शनी लगवाई है। बाद में विवि के सभागार में भारी संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं के बीच श्री चन्द्रप्रकाश तिवारी ने विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में बिताए दिनों का जिक्र किया। विवि के संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क एवं सेवायोजन) श्री राम महेश मिश्र ने भारतीय सेना की विभिन्न सेवाओं में देसंविवि के नैदानिक मनोविज्ञान एवं योग विज्ञान के विद्यार्थियों के सेवायोजन की सम्भावनाएँ तलाशने व उसमें सहयोग करने की चर्चा कर्नल सचदेवा से की। ❍

विद्यालयों में नित्य होता है 'ऋषि चिंतन' का पाठ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विशिष्ट प्रयासों से अब उत्तराखण्ड के कई इण्टर कॉलेजों में गायत्री महामंत्र के सस्वर गायन के बाद युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी विचारों के पाठ का क्रम आरंभ हो गया है। इन विद्यालयों में पूज्य गुरुदेव के प्रखर विचारों के विशिष्ट संकलन वाली पुस्तक 'ऋषि चिंतन के सान्निध्य में' से एक पृष्ठ पढ़ा जाता है। उल्लेखनीय है कि इसमें वर्ष के ३६५ दिनों के लिए ३६५ विचार-पृष्ठ संकलित हैं।

पिछले दिनों ऋषिकेश में आईडीपीएल स्थित राजकीय इण्टर कॉलेज में उत्तराखण्ड प्रान्त के राजकीय इण्टर कॉलेजों के प्रधानाचार्यों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें एससीईआरटी द्वारा 'देवभूमि उत्तराखण्ड और हमारे शिक्षक' विषय पर वार्ता हेतु श्री राम महेश मिश्र, प्रतिनिधि देव संस्कृति विश्वविद्यालय आमंत्रित थे। उनकी प्रेरणा से १८ में से ०८ प्राचार्यों ने यह ग्रंथ समूल्य लिए। इसके पूर्व हरिद्वार में ६० प्राचार्यों की गोष्ठी में इसकी चर्चा किए जाने के बाद ३९ प्राचार्यों ने यह ग्रंथ प्राप्त करके विद्यार्थियों को इस ज्ञान-भण्डार का लाभ देने की शुरुआत की। ❍

आन्नेकी गाँव में पुनः वृक्षारोपण, १५५० पौधे लगाये

शांतिकुंज के आपदा प्रबंधन दल ने अपनी आदर्श ग्राम्य विकास योजना के अंतर्गत चयनित आन्नेकी गाँव में विगत २३ मई को वृक्षारोपण करते हुए ६०० पौधे लगाये थे। इस सेवा से उत्साहित गाँव वालों ने अपने सहयोग का हाथ बढ़ाते हुए पुनः वृक्षारोपण का अनुरोध शांतिकुंज से किया। उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए ३ सितम्बर को शांतिकुंज ने वहाँ पुनः वृक्षारोपण अभियान चलाकर १५५० पौधे रोपे।

वृक्षारोपण से पूर्व पूजन-स्वस्तिवाचन करते शांतिकुंज प्रतिनिधि और वृक्षारोपण करते ग्रामीण

इस बार के अभियान में हरिद्वार जिले के बहादराबाद के निकटस्थ गाँव आन्नेकी के अलावा उसके पास के रसूलपुर एवं तेलीवाड़ा गाँव में भी वृक्षारोपण हुआ। वहाँ कलमी आम की उत्कृष्ट किस्म, अमरूद, कटहल आदि फलदार वृक्ष, हारसिंगार, बहेड़ा, हरड़, आदि के औषधीय पेड़ तथा अशोक के सज्जावाले वृक्ष रोपे गये। वृक्षारोपण दल का नेतृत्व श्री विष्णु मित्तल, श्री घनश्याम देवांगन, श्री प्रेमलाल बिरला ने किया।

हरीतिमा संवर्धन अभियान के लिए समर्पित बहिनों ऊषा घई एवं विजया घई, परिव्राजक विजय कुमार तथा ग्राम प्रबंधन संकाय के ३० भाई उनके सहयोगी थे। तीनों गाँवों में गाँववासियों की सभा हुई, जिनमें शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने वृक्षों के उपकार की महिमा एवं आज के संकट की चर्चा करते हुए वृक्षारोपण तथा उनके पालन-पोषण का उत्साह जगाया। गाँव वासियों ने वैदिक कर्मकाण्ड के साथ पूजन कर उनका वरण करते हुए पुत्रवत पालन-पोषण के संकल्प लिए, तत्पश्चात्-वृक्षारोपण किया। शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने पिछले अभियान में रोपे गये पौधों का निरीक्षण किया और गाँववासियों के संकल्पबद्ध सहयोग के लिए आभार ज्ञापन किया। रसूलपुर के ग्राम प्रधान श्री मूलर सिंह इस अभियान के लिए विशेष रूप से उत्साहित थे। ❍

सुअवसरों की प्रतीक्षा में बैठे मत रहो। उद्यम के लिए हर घड़ी शुभ मुहूर्त है और हर पल सुअवसर।